

रीवा जिले में महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दीपा सिंह¹ and डॉ. विवेक कुमार पटेल²

¹शोधार्थी वाणिज्य, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

²प्राचार्य एवं सह-प्राध्यापक (वाणिज्य), शासकीय महाविद्यालय, पवई, जिला पन्ना (म.प्र.)

सारांश – प्रस्तुत शोध का उद्देश्य रीवा जिले में महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। वर्तमान आर्थिक परिवेश में महिला उद्यमिता महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, स्वरोजगार, आय-सृजन तथा पारिवारिक आर्थिक सुदृढ़ता का महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरी है। उद्यमिता महिलाओं को स्वयं की आय अर्जित करने के साथ-साथ बचत, निवेश, वित्तीय प्रबंधन तथा पारिवारिक आर्थिक निर्णयों में सहभागिता का अवसर प्रदान करती है। प्रस्तुत अध्ययन में आर्थिक आत्मनिर्भरता को महिला की आय अर्जित करने की क्षमता, बचत, परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं में योगदान तथा आर्थिक निर्णय लेने की सहभागिता के संबंध में देखा गया है। प्रस्तुत शोध से ज्ञात होता है कि महिला उद्यमिता आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च एवं मध्यम आर्थिक आत्मनिर्भरता वाली महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, जिससे यह संकेत मिलता है कि उद्यमिता महिलाओं की आय एवं आर्थिक निर्णय क्षमता को सुदृढ़ कर रही है। तथापि पूँजी, ऋण, विपणन, तकनीकी ज्ञान एवं बाजार संबंधी कठिनाइयाँ महिला उद्यमिता के विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं। अतः वित्तीय एवं संस्थागत सहायता के साथ बाजार एवं कौशल विकास को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: महिला उद्यमिता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, महिला उद्यमी, आय, बचत, वित्तीय निर्णय, स्वरोजगार, आर्थिक सशक्तिकरण, रीवा जिला।

1. प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की आर्थिक भूमिका में विगत वर्षों में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हुआ है। पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू गतिविधियों एवं पारिवारिक दायित्वों तक सीमित मानी जाती थी, किंतु शिक्षा के विस्तार, तकनीकी विकास, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास तथा स्वरोजगार के अवसरों ने महिलाओं की आर्थिक सहभागिता को व्यापक बनाया है। वर्तमान समय में महिलाएँ उत्पादन, व्यापार, सेवा, वित्तीय प्रबंधन तथा उद्यम संचालन जैसे विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में सक्रिय रूप से सहभागिता कर रही हैं। इस परिवर्तन ने महिला उद्यमिता को आर्थिक विकास एवं समावेशी विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया है। उद्यमिता का मूल संबंध संसाधनों के संगठन, जोखिम वहन, पूँजी के विनियोग, उत्पादन, विपणन एवं लाभार्जन से है। जब महिला स्वयं किसी व्यवसाय की स्थापना एवं संचालन करती है,



तो वह आर्थिक संसाधनों के उपयोग एवं प्रबंधन में प्रत्यक्ष रूप से सहभागी होती है। इस दृष्टि से महिला उद्यमिता केवल स्वरोजगार का साधन नहीं है, बल्कि महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं वित्तीय क्षमता के विकास का प्रभावी माध्यम भी है। आर्थिक आत्मनिर्भरता का आशय ऐसी आर्थिक स्थिति से है जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं आय अर्जित करने तथा उपलब्ध आर्थिक संसाधनों का स्वतंत्र रूप से उपयोग एवं प्रबंधन करने में सक्षम हो। महिलाओं के संदर्भ में आर्थिक आत्मनिर्भरता का संबंध केवल व्यक्तिगत आय से नहीं है, बल्कि इसमें बचत, निवेश, पारिवारिक आर्थिक योगदान, वित्तीय निर्णयों में सहभागिता तथा व्यवसायिक संसाधनों पर नियंत्रण भी सम्मिलित है। इसलिए महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का अध्ययन बहुआयामी दृष्टिकोण से किया जाना आवश्यक है। वाणिज्य विषय के परिप्रेक्ष्य में महिला उद्यमिता विशेष महत्व रखती है। व्यवसाय की स्थापना एवं संचालन में पूँजी, लागत, उत्पादन, मूल्य निर्धारण, विपणन, लाभ-हानि तथा जोखिम जैसे विभिन्न वाणिज्यिक तत्व सम्मिलित होते हैं। महिला उद्यमी इन प्रक्रियाओं में सहभागी होकर वित्तीय एवं व्यवसायिक प्रबंधन का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करती है। इससे उसके आर्थिक व्यवहार में परिवर्तन आता है तथा आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न सरकारी एवं संस्थागत प्रयास किए गए हैं। वित्तीय सहायता, कौशल प्रशिक्षण, ऋण सुविधा, स्वरोजगार, बाजार संपर्क तथा उद्यमिता विकास से संबंधित कार्यक्रम महिलाओं को व्यवसाय स्थापित करने एवं संचालित करने में सहायता प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर महिला आर्थिक सहभागिता में भी वृद्धि के संकेत प्राप्त होते हैं। भारत सरकार के अनुसार महिला श्रमबल सहभागिता दर में पिछले वर्षों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता इस वृद्धि का महत्वपूर्ण आधार रही है। महिला उद्यमिता के संबंध में उपलब्ध नवीन आधिकारिक आँकड़े भी इसकी बढ़ती भूमिका को स्पष्ट करते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् 2024 में महिला-प्रधान स्वामित्व वाले प्रतिष्ठानों की हिस्सेदारी में वृद्धि तथा महिला निदेशक वाले कम्प्यू-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं की आर्थिक गतिविधियाँ केवल पारंपरिक स्वरोजगार तक सीमित न रहकर औपचारिक उद्यमिता एवं व्यवसायिक गतिविधियों की ओर भी बढ़ रही हैं।

महिला उद्यमिता का एक प्रमुख परिणाम आय-सृजन है। स्वयं के व्यवसाय से प्राप्त आय महिला को व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं में योगदान करने की क्षमता प्रदान करती है। परिवार की कुल आय में महिला की हिस्सेदारी बढ़ने से उसकी आर्थिक भूमिका मजबूत होती है। इसके साथ ही आय का एक भाग बचत एवं व्यवसाय के पुनर्निवेश में लगाया जा सकता है, जिससे महिला की आर्थिक सुरक्षा एवं व्यवसायिक स्थिरता दोनों में वृद्धि होती है। महिला उद्यमिता बचत एवं पूँजी निर्माण की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है। स्वयं की आय होने पर महिला भविष्य की आवश्यकताओं के लिए वित्तीय संसाधन सुरक्षित करने में सक्षम होती है। व्यवसाय से प्राप्त लाभ का पुनर्निवेश उद्यम के विस्तार में सहायक होता है। इस प्रकार उद्यमिता वर्तमान आय के साथ भविष्य के आर्थिक संसाधनों के निर्माण का भी आधार बनती है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम वित्तीय निर्णय क्षमता है। व्यवसाय संचालन के दौरान महिला को पूँजी की व्यवस्था, कच्चे माल की खरीद, बिक्री, लागत, मूल्य निर्धारण, लाभ, बचत तथा पुनर्निवेश से संबंधित निर्णय लेने पड़ते हैं। इन गतिविधियों में निरंतर सहभागिता से उसके वित्तीय ज्ञान एवं प्रबंधन क्षमता में वृद्धि होती है। धीरे-धीरे यह क्षमता परिवार के आर्थिक निर्णयों तक भी विस्तारित होती है। महिला उद्यमिता और आर्थिक सशक्तिकरण के मध्य संबंध को विभिन्न विद्वानों ने भी रेखांकित किया है। चंमस एवं डवदकंस द्वारा संपादित ळमदकमतमक प्दमुनसपजपमे पद चंयक दक न्दचंपक वता वववउमद पद



पदकपं में महिलाओं के आर्थिक योगदान, आर्थिक सशक्तिकरण एवं महिला उद्यमिता से जुड़े विभिन्न पक्षों पर चर्चा की गई है। इसी प्रकार ज्ञान ने भारतीय संदर्भ में महिला उद्यमिता, व्यवसाय, सतत विकास एवं महिला सशक्तिकरण के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया है।

वित्तीय पहुँच महिला उद्यमिता का महत्वपूर्ण निर्धारक है। ढतह, ढनचजं एवं डंससपबा के अध्ययन में ग्रामीण भारत के संदर्भ में वित्तीय पहुँच एवं उद्यमिता के बीच संबंध का परीक्षण किया गया तथा यह पाया गया कि वित्तीय संस्थाओं तक बेहतर पहुँच गैर-कृषि उद्यमिता को बढ़ावा दे सकती है। इससे महिला उद्यमियों के लिए संस्थागत वित्त की उपलब्धता के महत्व को समझा जा सकता है। रीवा जिले के संदर्भ में महिला उद्यमिता का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ महिलाओं द्वारा विभिन्न लघु एवं सूक्ष्म व्यवसाय, सेवा गतिविधियाँ, खाद्य प्रसंस्करण, सिलाई-कढ़ाई, सौंदर्य सेवाएँ, डेयरी, हस्तशिल्प तथा अन्य स्वरोजगार गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। इन व्यवसायों का स्थानीय बाजार, परिवार की आय तथा रोजगार के अवसरों से प्रत्यक्ष संबंध है। अतः महिला उद्यमियों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन स्थानीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप को समझने में भी सहायक है। हालाँकि महिला उद्यमिता के विकास में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। सीमित पूँजी, ऋण प्राप्त करने की कठिनाई, बाजार की जानकारी का अभाव, उत्पादों के विपणन में समस्या, तकनीकी ज्ञान की कमी, डिजिटल साधनों का सीमित उपयोग तथा बाजार प्रतिस्पर्धा महिला उद्यमियों की आर्थिक प्रगति को प्रभावित कर सकती हैं। ठंदन मज 'स. के अध्ययन में भी भारतीय महिला उद्यमियों के व्यवसायिक निर्णय एवं प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों तथा पारिवारिक सहयोग के महत्व को रेखांकित किया गया है।

महिला उद्यमिता के सामने उपस्थित इन बाधाओं के बावजूद व्यवसायिक गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की क्षमता रखती है। आर्थिक आत्मनिर्भर महिला न केवल परिवार की आय में योगदान करती है, बल्कि वित्तीय निर्णयों में अपनी भूमिका स्थापित करती है तथा भविष्य के लिए आर्थिक संसाधन निर्मित करती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय विषय रीवा जिले की महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का विश्लेषण करना है। अध्ययन में महिला उद्यमियों की आर्थिक स्थिति को आय, बचत, पारिवारिक आर्थिक योगदान तथा आर्थिक निर्णय क्षमता जैसे संकेतकों के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही प्राथमिक समकों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि उद्यमिता महिलाओं को किस सीमा तक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में सहायक है। इस प्रकार महिला उद्यमिता व्यक्तिगत आर्थिक स्वतंत्रता, पारिवारिक आर्थिक सुदृढ़ता तथा स्थानीय आर्थिक विकास के मध्य महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। इसलिए रीवा जिले के विशेष संदर्भ में महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का अध्ययन वाणिज्य एवं प्रबंधन शोध की दृष्टि से प्रासंगिक एवं उपयोगी है।

2. शोध का उद्देश्य

महिला उद्यमिता वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। स्वयं का व्यवसाय महिलाओं को आय अर्जित करने, बचत करने, व्यवसाय में पुनर्निवेश करने तथा पारिवारिक आर्थिक निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य रीवा जिले की महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता की स्थिति का विश्लेषण करना तथा उद्यमिता से प्राप्त आर्थिक लाभों का मूल्यांकन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –



- (1) रीवा जिले में महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता की स्थिति का विश्लेषण करना।
- (2) महिला उद्यमिता के माध्यम से आय, बचत एवं पारिवारिक आर्थिक निर्णयों में महिलाओं की सहभागिता का अध्ययन करना।

3. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के समकों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंक रीवा जिले की विभिन्न व्यवसायिक एवं स्वरोजगार गतिविधियों से संबद्ध महिला उद्यमियों से प्रत्यक्ष संपर्क, संरचित प्रश्नावली एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त किए गए हैं। अध्ययन में कुल 300 महिला उद्यमियों को उत्तरदाता के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रश्नावली में आय, बचत, पारिवारिक आर्थिक योगदान तथा आर्थिक निर्णयों में सहभागिता से संबंधित सूचनाएँ संकलित की गई हैं। द्वितीयक समंक पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, सांख्यिकीय प्रकाशनों तथा महिला उद्यमिता से संबंधित प्रमाणिक स्रोतों से प्राप्त किए गए हैं। डवैच की 'वउमद' दक डमद पद पदकप 2024 रिपोर्ट विभिन्न सरकारी स्रोतों से प्राप्त लैंगिक आर्थिक एवं सामाजिक संकेतकों का संकलन प्रस्तुत करती है। प्राप्त प्राथमिक समकों को वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध कर प्रतिशत विधि से विश्लेषित किया गया है।

4. विश्लेषण

महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का आकलन करने के लिए 300 उत्तरदाताओं से प्राप्त प्राथमिक समकों को चार श्रेणियों— उच्च, मध्यम, निम्न तथा नगण्य सुधार में वर्गीकृत किया गया है। आर्थिक आत्मनिर्भरता को केवल आय अर्जन तक सीमित न रखकर आय, बचत, पारिवारिक आर्थिक योगदान तथा आर्थिक निर्णयों में सहभागिता के समग्र आधार पर देखा गया है। उद्यमिता से प्राप्त आय महिला को अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा परिवार की आय में योगदान देने का अवसर प्रदान करती है। इसके साथ बचत करने एवं व्यवसाय में पुनर्निवेश की क्षमता विकसित होती है। व्यवसाय संचालन के दौरान पूँजी, लागत, मूल्य, बिक्री, लाभ तथा विपणन संबंधी निर्णय लेने से महिलाओं की वित्तीय एवं प्रबंधकीय क्षमता भी विकसित होती है। प्रस्तुत प्राथमिक समकों में उच्च आर्थिक आत्मनिर्भरता वाली महिला उद्यमियों की संख्या सर्वाधिक है। अतः महिला उद्यमिता को आर्थिक आत्मनिर्भरता में परिवर्तित करने के लिए ऋण एवं वित्तीय सहायता के साथ प्रशिक्षण, बाजार संपर्क तथा तकनीकी सहयोग आवश्यक है।

इस प्रकार रीवा जिले की महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता के स्तर से संबंधित जानकारी अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर संकलित किए गए समकों के आधार पर प्राप्त की गई है। प्राप्त प्राथमिक समकों को वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध कर सारणी क्रमांक-01 में विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। सारणी के माध्यम से महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता की स्थिति को विभिन्न स्तरों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक-01

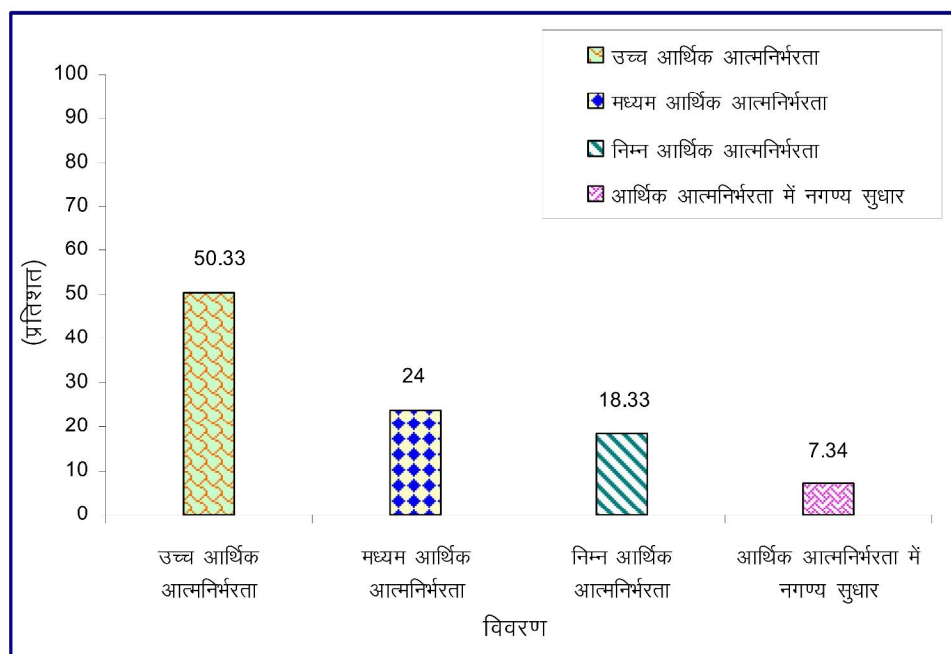
रीवा जिले की महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का स्तर संबंधी विवरण

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	उच्च आर्थिक आत्मनिर्भरता	151	50.33
2	मध्यम आर्थिक आत्मनिर्भरता	72	24.00



3	निम्न आर्थिक आत्मनिर्भरता	55	18.33
4	आर्थिक आत्मनिर्भरता में नगण्य सुधार	22	7.34
कुल योग		300	100.00

स्रोत – क्षेत्रीय प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त समकों के आधार पर।



आरेख क्रमांक-01 : रीवा जिले की महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का स्तर संबंधी विवरण।

उपरोक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट होता है कि कुल 300 महिला उद्यमियों में सर्वाधिक 151 उत्तरदाता (50.33 प्रतिशत) उच्च आर्थिक आत्मनिर्भरता की श्रेणी में हैं। इसके पश्चात् 72 उत्तरदाता (24 प्रतिशत) मध्यम आर्थिक आत्मनिर्भरता की श्रेणी में सम्मिलित हैं। इस प्रकार उच्च एवं मध्यम आर्थिक आत्मनिर्भरता वाली महिला उद्यमियों की संयुक्त संख्या 223 अर्थात् 74.33 प्रतिशत है। यह परिणाम दर्शाता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश महिला उद्यमियों की आर्थिक स्थिति उद्यमिता के माध्यम से अपेक्षाकृत सुदृढ़ हुई है। वहीं 55 उत्तरदाता (18.33 प्रतिशत) निम्न तथा 22 उत्तरदाता (7.34 प्रतिशत) नगण्य सुधार की श्रेणी में हैं। इससे स्पष्ट होता है कि एक वर्ग अभी भी अपेक्षित आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहा है। अतः महिला उद्यमिता को अधिक प्रभावी बनाने के लिए वित्तीय संसाधन, ऋण सुविधा, बाजार संपर्क, प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

5. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन "रीवा जिले में महिला उद्यमियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता का विश्लेषणात्मक अध्ययन" के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि महिला उद्यमिता महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करने का प्रभावी माध्यम है। उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं को स्वयं की आय अर्जित करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे उनकी आर्थिक निर्भरता में कमी आने के साथ



परिवार की आर्थिक व्यवस्था में उनकी सहभागिता बढ़ती है। व्यवसाय से अर्जित आय परिवार की कुल आय में वृद्धि करने के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, घरेलू आवश्यकताओं तथा अन्य पारिवारिक व्ययों में योगदान करने में सहायक होती है। साथ ही आय के एक भाग को बचत एवं व्यवसाय में पुनर्निवेश करने से आर्थिक सुरक्षा तथा व्यवसायिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है। वाणिज्यिक दृष्टिकोण से उद्यमिता महिलाओं में व्यवसाय प्रबंधन, वित्तीय नियोजन, लागत नियंत्रण, क्रय-विक्रय, मूल्य निर्धारण एवं विपणन संबंधी दक्षताओं का विकास करती है तथा आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता को सुदृढ़ करती है। अध्ययन के आधार पर यह भी स्पष्ट होता है कि महिला उद्यमिता को अधिक प्रभावी बनाने के लिए केवल ऋण सुविधा पर्याप्त नहीं है, बल्कि वित्तीय साक्षरता, लेखांकन, व्यवसाय प्रबंधन, डिजिटल भुगतान, ई-कॉमर्स, ब्रांडिंग, पैकेजिंग एवं विपणन संबंधी व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा स्थानीय एवं डिजिटल बाजारों तक पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रीवा जिले में महिला उद्यमिता महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता की महत्वपूर्ण आधारशिला है तथा वित्तीय, तकनीकी, प्रबंधकीय एवं विपणन सहायता के समन्वित विस्तार से महिलाओं की आर्थिक स्थिति, पारिवारिक आय, स्थानीय रोजगार सृजन एवं क्षेत्रीय आर्थिक विकास को अधिक गति प्रदान की जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. कौर, हरप्रीत, भारत में महिला एवं उद्यमिता : शासन, सततता एवं नीतियाँ, रूटलेज, लंदन, 2021।
2. पटेल, विभूति एवं मोंडल, नंदिता, भारत में महिलाओं के सशुल्क एवं अवैतनिक कार्य में लैंगिक असमानताएँ, स्प्रिंगर, सिंगापुर, 2022।
3. बराल, रूपश्रीय डे, चित्राय मनवाझगन, सुभाश्री एवं कमालिनी, एस., भारत में महिला उद्यमी : एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जेंडर एंड एंटरप्रेन्योरशिप, एमराल्ड पब्लिशिंग, बिंगले, 2023।
4. सचदेवा, गीता, भारतीय महिला उद्यमिता : मुद्दों, अवसरों एवं विकास का एक अध्ययन, आईजीआई ग्लोबल, हर्शी, 2023।
5. गर्ग, संध्याय गुप्ता, समर्थ एवं मलिक, सुशांत, वित्तीय पहुँच एवं लैंगिक आधार पर उद्यमिता : ग्रामीण भारत से साक्ष्य, स्मॉल बिजनेस इकोनॉमिक्स, स्प्रिंगर, शैम, 2024।
6. सैनी, प्रीतिकाय मल्होत्रा, सुनीता एवं भूषण, संजय, महिला उद्यमियों का सशक्तिकरण : सरकारी सहायता कार्यक्रमों एवं उनके सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण, मुद्रा : जर्नल ऑफ फाइनेंस एंड अकाउंटिंग, जर्नल प्रेस इंडिया, नई दिल्ली, 2024।
7. सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत में महिलाएँ एवं पुरुष 2024 : चयनित संकेतक एवं आँकड़े, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2025।
8. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, वार्षिक प्रतिवेदन 2024-25, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2025।

